विचार बिन्दु

चरित्र के बिना ज्ञान बुराई की ताकत बन जाता है। जैसे कि दुनिया के कितने ही चालाक चोरों और भले मानुष बदमाशों के उदाहरण से स्पष्ट है।

–महात्मा गाँधी

ड्राइंग रुम तक पहुंच बनाती डिजिटल ड्रग्स

बहुत कम समय में ड्राइंग रुम से बेड रुम और बच्चे से बुजुर्ग तक डिजिटल ड्रग्स ने अपनी पहुंच बना ली है। देखा जाए तो आज डिजिटल ड्रग्स यानी बिंज वाचिंग यानी साइकोसोमैटिक डिसआर्डर से कोई अछूता नहीं रहा है। दरअसल जिसके पास भी एंड्रोइड फोन है उनमें से माइनस प्वाइंट 1 प्रतिशत को अपवाद स्वरुप छोड़ दिया जाए तो बाकी कमोबेस इसके बुरी तरह से शिकार हो चुके हैं। कोई रील्स में व्यस्त है, तो कोई फेसबुक, एक्स या टेलीग्राम या इससे मिलते-जुलते किसी लत से ग्रस्त है तो कोई वीडियो गेम सहित तरह-तरह के गेमों या फिर यू ट्यूब की लत से ग्रस्त हो चुका है। ओटीटी प्लेटफार्म ने भी इसे विस्तारित किया है। सोशियल मीडिया से जुड़ कर इस लत से प्रभावित हो रहे हैं। देखा जाए तो अब तो एक कमरे में बैठे हुए परिजनों के बीच संवाद भी दूर की बात होती जा रही है। इसे एक नए तरह का नशा कहा जा सकता है। मजे की बात यह है कि यह नशा किसी दूसरे नशे से कमतर नहीं है। अपितु कुंठा, तनाव, त्रास, डिप्रेशन, अनिद्रा और ना जाने इसी तरह की कई प्रकार की मनोविकारों बीमारी से लोग ग्रसित हो रहे हैं। सभी लोगों के स्वभाव में अजीब तरह का बदलाव देखने को मिल रहा है।

नशे के इतिहास में इतने कम समय में घर-घर तक पंहुच बनाने वाला संभवतः यह पहला नशा है। केवल और केवल 21 साल में ही बिंज वाचिंग देश-दुनिया में घर-घर में अपनी जगह बना चुका है। यह नए जमाने का नए तरह का नशा है। ड्रग्स की भाषा में यह डिजिटल ड्रग्स है और मेडिकल की भाषा में कहा जाएं तो यह एक तरह की वो बीमारी है जिसे मनोचिकित्सक साइकोसोमैटिक डिसआर्डर कह कर पुकारने लगे हैं। सबसे मजे की बात यह है कि इसके किसी ना किसी रुप से क्या युवा-क्या बुजुर्ग और क्या पुरुष और क्या महिलाएं, यहां तक कि बच्चे तक इसकी जद में आते जा रहे हैं। यह नए जमाने का नशा कहें या जुनून, सीधे दिमाग पर असर डालता है। आम बोलचाल की भाषा में बात करें तो डिजिटल ड्रग्स या बिंज वाचिंग का सीधा-सीधा अर्थ है किसी सीरिज या इसी तरह के कार्यक्रम, गेम आदि को एक ही सीटिंग में पूरा करने की जिद या सीरियल या वेब सीरिज के उपलब्ध सारे एपिसोड़ देखने का जुनून है। यह एक प्रकार की लत है और ओटीटी प्लेटफार्म के आने के बाद इसका प्रभाव अधिक ही हो गया है। वेब सीरिज ने इसे और अधिक लोकप्रिय बना दिया है तो वीडियो गेम खासतौर से मोबाईल के गेम और इसी तरह के कार्यक्रम, सोशियल मीडिया जिसमें सेल्पी लेने की लत तो रील्स बनाने, फेसबुक, इंस्टाग्राम में अपलोड करने और उन पर आने वाले रिएक्सन्स को लेकर तनाव में रहना एक तरह से इसी श्रेणी में रखा जा सकता है।

ड्रग्स की भाषा में यह डिजिटल ड्रग्स है और मेडिकल की भाषा में कहा जाएं तो यह एक तरह की वो बीमारी है जिसे मनोचिकित्सक साइकोसोमैटिक डिसआर्डर कह कर पुकारने लगे हैं। सबसे मजे की बात यह है कि इसके किसी ना किसी रुप से क्या युवा-क्या बुजुर्ग और क्या पुरुष और क्या महिलाएं, यहां तक कि बच्चे तक इसकी जद में आते जा रहे हैं। यह नए जमाने का नशा कहें या जुनून, सीधे दिमाग पर असर डालता है।

बिंज वाचिंग शब्द पहली बार 2003 में चलन में आया, पर 2013 में यह अधिक लोकप्रिय हुआ। नेटफ्लेक्स व इसी तरह के ओटीटी आधारित प्लेटफार्म ने घर घर में इसे पहुंचा दिया और आज तो जिस तरह से वेब सीरिज का मार्केट उछल रहा है उसी तरह से वेब सीरिज के उपलब्ध एपिसोड को एक ही सीटिंग में देखने का नशा चढ़ने लगा है। दूसरे नशों की तरह ही इस तरह की लत व्यक्ति के दिमाग पर सीधा असर करती है। इसके चलते व्यक्ति में एकाकीपन, चिडचिड़ापन, अनिद्रा, दैनिक व्यवहार में बदलाव यहां तक कि डिप्रेशन के हालात तक होने लगे हैं। जवाहर लाल नेहरु मेडिकल कॉलेज मायागंज अस्पताल के मनोरोग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अशोक भगत के अनुसार अब तो सप्ताह में सात से आठ नए मरीज आने लगे हैं। साइकोसोमैटिक डिसआर्डर के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी है।

दरअसल वेबसीरिज का जिस तरह से प्रचार कैंपेन चलता है उससे एक तो वेबसीरिज रीलिज होने की तिथि तक लंबी प्रतीक्षा चलती है और प्रोमोज देखकर लोगों में सस्पेंस बन जाता है और फिर सीरिज के रीलिज होते ही व्यक्ति सोचता है कि मैं तो अभी और इसी समय इसके उपलब्ध सभी एपिसोड को देखकर ही कोई दूसरा काम करुं। यह एक तरह का डिजिटल नशा हो जाता है। महिलाओं में जिस तरह से टीवी सीरियल्स के प्रति जिज्ञासा हो जाती है और फिर एक भी एपिसोड नहीं देख पाने पर समय मिलते ही उस एपिसोड को देखने लगती हैं वैसे ही वेबसीरिज की लत हो जाती है। दरअसल टीवी सीरियल्स हो या वेबसीरिज बात एक ही हो जाती है। वीडियो गेम्स व इसी तरह के अन्य प्लेटफार्मों पर भी सब कुछ भुलाकर टास्क पूरा करने में जुट जाते हैं। यह सब बींज वाचिंग की श्रेणी में ही आती है।

इसका सबसे बड़ा असर जहां व्यक्ति के स्वयं के स्वास्थ्य पर, आंखों पर, दिमाग पर पड़ता है वहीं इसका असर सामाजिक ताने-बाने पर भी देखा जा सकता है। बिंज वांचंग के शिकार लोगों में डिप्रेशन, एंजाइटी, मानसिक विकार, अनिद्रा, चिडचिड़ापन, बात बात पर आपा खोना आदि आम हो जाता है। मनोविकार तो होता ही होता है। मजे की बात यह है कि अपनी पंसद के कार्यक्रम, सीरिज या एपिसोड के चलते व्यक्ति सबकुछ भूल जाता है और उसे दीन दुनिया से उस समय तो कोई मतलब ही नहीं रहता। ऐसे में सौ टके का सवाल यही है कि नये जमाने के इस नए नशे से छुटकारा कैसे पाया जाएं? हांलाकि मनोविज्ञानी और मनोचिकित्सक अपने स्तर पर समाधान खोज रहे हैं और समाज विज्ञानियों को भी इस दिशा में पहल करनी होगी। बिंज वाचिंग या यों कहें कि डिजिटल ड्रग्स की समस्या को सिरे से खारिज नहीं किया जा सकता। यह जिस तरह से व्यक्ति के दिलों-दिमाग को प्रभावित कर रही हैं वह अपने आप में गंभीर है। आज के बच्चे जिस तेजी से इसके शिकार हो रहे हैं वह और भी गंभीर और चिंतनीय हो जाती है। सामाजिक संबंध इससे प्रभावित हो रहे हैं तो सबसे अधिक चिंतनीय यह हो जाती है कि व्यक्ति इस कदर खो जाता है कि उसे दूसरा कुछ दिखता ही नहीं। ऐसे में समय रहते कोई समाधान खोजना होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 4 जुलाई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, मृगशिरा नक्षत्र रात्रि 3:55 तक, गंड योग प्रातः 6:59 तक, वणिज करण प्रातः 5:55 तक, चन्द्रमा आज दिन 3:58 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-वृष, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरू-वृष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज भद्रा प्रातः 5:55 से सांय 5:26 तक रहेगी। आज मास शिवरात्रि है। आज चतुरदशी तिथि का क्षय हुआ है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:24 तक, चर 10:49 से 12:31 तक, लाभ-अमृत 12:31 से 3:56 तक, शुभ 5:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:41, सूर्यास्त 7:20

मेष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृष
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

मिथुन
आर्थिक/वित्तिय मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। धन हानि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

कर्क
आर्थिक मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में परेशानी अभी यथावत बनी रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

धनु
स्वास्थ्य में सुधार होगा। मानसिक तनाव दूर होने लगेगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा है।

मीन
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

जैसा तुम सोच रहे साथी, वैसे आबाद नहीं हैं हम

डॉ. रामावतार शर्मा

वर्तमान समय में भारत की आबादी में 10-11 करोड़ लोग 60 वर्ष या उससे अधिक उम्र के हैं। एक गणना के अनुसार सन् 2026 के बाद 60 वर्ष की उम्र के लोगों की संख्या 17-18 करोड़ के बीच हो जायेगी। एक हिसाब से तो देश के लिए यह एक गर्व की बात है क्योंकि हमारे यहां लोगों की उम्र में बढ़ोतरी हो रही है। यहां यह भी महत्वपूर्ण बात है कि इन साठ की उम्र के पार लोगों में अधिकतर लोग कुछ अपने घर पर आर्थिक सहयोग भी दे रहे होते हैं। प्रथम दृष्टि से देखेंगे तो लगेगा कि भारत में सब ठीक-ठाक है परंतु क्या वास्तव में सब कुछ ठीक है? हालांकि हमारे यहां बड़े रूप में मौलिक अनुसंधान की व्यापकता तो नहीं नजर आती पर फिर भी कुछ आंकड़े परेशान करने वाले हैं।

इन आंकड़ों के अनुसार देश में कोई 70 प्रतिशत बुजुर्गों के साथ परिजनों द्वारा सम्मानजनक व्यवहार नहीं किया जा रहा है। इस व्यवहार में अनदेखा करना, डांटना-डपटना, पर्याप्त भोजन न देना और कुछ मामलों में तो गाली-गलोच करना या शारीरिक यातना देना भी पाया गया है। अब यदि सामान्य समझ से देखा जाए तो वृद्धावस्था जीवन का सबसे बेहतर समय होना चाहिए। एक व्यक्ति ने जीवनपर्यंत काम किया, घर बसाया और अपनी संतानों को स्थापित किया। इस सब के बाद एक सुविधाजनक वृद्धावस्था की उम्मीद कोई बड़ी बात नहीं होनी चाहिए। परंतु क्या वास्तविकता में ऐसा होता है?

समाज पर एक सरसरी नजर बता सकती है कि आबादी के एक अच्छे खासे प्रतिशत लोगों की वृद्धावस्था काफी कठिन होती है और कुछ की तो नारकीय भी होती है। कहीं पर तो आर्थिक कारण होते हैं, कहीं सामाजिक और कुछ लोगों में सब सुविधाओं के बावजूद बड़ा कष्टदायक अकेलापन पाया जाता है। भारत में असहाय बुजुर्गों की कोई व्यवहारिक सामाजिक सुरक्षा प्रणाली नहीं है। सरकारी योजनाओं का उद्देश्य जीवन के आखिरी सालों को सार्थक बनाने की बजाय वोट खरीदना स्पष्ट नजर आता है। इतने विशाल और इतनी आबादी वाले देश में सरकार के लिए संभव भी नहीं है कि वह हर नागरिक तक पहुंच सके। बात व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर होनी चाहिए। सर्वप्रथम बात तो हर व्यक्ति को स्वयं की वृद्धावस्था के बारे में योजना बनाने की है।

एक बेहतर जीवन जीने के लिए आपको कोई न कोई कुशलता सीखनी होगी और जीवन की आवश्यकताओं को अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार ढालना होगा। आर्थिक स्वास्थ्य को सही बनाए रखने के लिए अर्थहीन सामाजिक रीति रिवाज को त्यागने की हिम्मत जुटानी होगी।

वस्तु के पीछे दौड़ने की बजाय 30-32 साल की उम्र से ही वृद्धावस्था की आवश्यकताओं के लिए म्यूचुअल फंड जैसी योजनाओं में नियमित राशि जमा करवानी होगी। जिंदगी में एक कड़वे सच को स्वीकार कीजिए कि आपका स्वास्थ्य और आपका धन ही आखिरी समय तक आपका साथ देते हैं, बाकी सब सहयोग संयोग से ही होते हैं। अपना रिटायरमेंट फंड किसी को भी मत दीजिए। ये एक कड़ा निर्णय है पर यदि आप सम्मान के साथ जीना चाहते हो ऐसा करना होगा। याद रखिए परजीवी सदा असुरक्षित ही अनुभव करता रहता है।

अपनी संतान पर भरोसा रखिए पर जीवन में बदलती परिस्थितियों को भी ध्यान में रखिए। वानप्रस्थ व्यवहार में लाना अब संभव नहीं है पर विचारों में तो लाइए। 60 वर्ष की उम्र प्राप्त करते ही अपने बच्चों के जीवन में हर वक्त अपने को थोपना बंद कर स्वयं अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाइए। जीवन का हर स्वरूप डिजिटल होता जा रहा है और साइबर ठग बुजुर्ग लोगों पर गिद्ध दृष्टि लगाए बैठे हैं तो उनसे सावधान रहिए। जीवन के इस पड़ाव पर मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। जीवन की आखिरी पारी यदि आनंद के साथ नहीं गुजरी तो पूरा जीवन व्यर्थ ही गया। सरकार की तरफ टकटकी लगा कर रखने से आपका जीवन नहीं सुधरने वाला है। अपनी प्राथमिकताएं आपको खुद निर्धारित करनी होंगी। 60 की उम्र पार करते ही कुछ नया कीजिए ताकि उम्र आधारिक मस्तिष्क रोगों से आजाद रहें। इन रोगों में पार्किनसन और अल्जाइमर विशेष होते हैं। शतरंज, कैरम, स्नूकर, सांप सीढी जैसे खेल खेलिए, बच्चों की मंडली का हिस्सा बनिए, कोई नई भाषा सीखिए। जीवन में जितना महत्वपूर्ण बचपन और जवानी है उतना ही वृद्धावस्था का भी महत्व है। जीवन आखिरी क्षण तक जीने के लिए सब मोह त्याग कर सिर्फ अपने पर ध्यान देकर अपने अनुभव को किसी न किसी माध्यम से बांटिए। इसी में जीवन की सार्थकता है।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

विशेष आवश्यकता वाले सरकारी स्कूल के बच्चों को परिवहन भत्ता देगी सरकार

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद ने सभी संस्था प्रधानों को निर्देश जारी किए

श्रीगंगानगर, (निसं)। सरकारी स्कूलों में पढ़ाई करने वाले विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, जो खुद चलकर स्कूल नहीं आ सकते और जिनको स्कूल तक लाने व ले जाने के लिए किसी व्यक्ति की जरूरत होती है, ऐसे छात्र-छात्राओं के अभिभावकों को शिक्षण सत्र 2024-25 में परिवहन भत्ता दिया जाएगा। राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद ने सभी संस्था प्रधानों को इस बारे में दिशा-निर्देश जारी किए हैं। योजना के तहत पात्र विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को हर तीन माह में परिवहन भत्ता दिया जाएगा, जो सीधे उनके बैंक खाते में जमा होगा।

एडीपीसी समसा के अनुसार पहली से 12वीं तक के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों और उनके अभिभावकों को यह भत्ता स्वीकृत किया जाएगा। ऐसे विद्यार्थी जो डिसेबिलिटी एक्ट 2016 में निर्धारित 21 श्रेणियों में आते हैं, वे इस भत्ते को पाने के पात्र होंगे। उन 24 श्रेणियों में अस्थिदोष, दृष्टिदोष, श्रवण दोष, मानसिक विमंदित, सेरेब्रल पाल्सी तथा आटिज्म आदि शामिल हैं। इस

■ **योजना के तहत पात्र विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों को हर तीन माह में परिवहन भत्ता दिया जाएगा**

श्रेणी में आने वाले सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत विद्यार्थी, जो 40 फीसदी या इससे ज्यादा दोष से प्रभावित हैं, उन्हें ये भत्ता स्वीकृत किया जाएगा। इसके लिए सक्षम चिकित्सा अधिकारी का दिव्यांगता प्रमाण पत्र होना जरूरी होगा। जिन विशेष आवश्यकता वाले छात्र-छात्राओं को सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग या अन्य किसी योजना से परिवहन भत्ते की राशि मिल रही है, उन्हें यह भत्ता नहीं मिलेगा। पात्र छात्र-छात्राओं को अधिकतम 450 रुपए प्रतिमाह से 10 माह के लिए तीन किश्तों में परिवहन भत्ता दिया जाएगा। पहली किश्त जुलाई माह में सितंबर तक की सीधे ही छात्र-छात्रा तथा उसके अभिभावक के संयुक्त बैंक खाते में जमा कराई जाएगी। इसी तरह अक्टूबर में दूसरी तथा जनवरी में तीसरी किश्त दी जाएगी, जो अप्रेल तक होगी। ये भुगतान विद्यार्थी की शाला में उपस्थिति के आधार पर देय होगा।

समग्र शिक्षा अभियान के अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक अरविंद्र सिंह ने बताया कि इस योजना में पात्र बच्चों के आवेदन पत्र संबंधित विद्यालय के संस्था प्रधान की ओर से भरवाए जाएंगे। पीइओ व यूसीइइओ के माध्यम से इन आवेदन पत्रों को प्रमाणीकरण के बाद संबंधित ब्लॉक के सीबीईओ कार्यालय में जमा करवना होगा।

गंगनहर में पानी में उतार-चढ़ाव के चलते खरीफ की बुवाई प्रभावित

गंगनहर में पूरे पानी की मांग को लेकर अनिश्चितकालीन धरना जारी

श्रीगंगानगर, (निसं)। गंगनहर में सोमवार शाम को 239 और सिंचाई पानी कम होकर खखां हैड पर 1389 क्यूसेक पानी प्रवाहित किया जा रहा था, जबकि रविवार को खखां हैड पर 1628 क्यूसेक सिंचाई पानी प्रवाहित किया जा रहा था। पंजाब क्षेत्र में 45 आरडी बीकानेर कैनाल पर सुबह 529 क्यूसेक पानी कम होकर सुबह 1752 क्यूसेक प्रवाहित किया जा रहा था जबकि शाम को 550 क्यूसेक सिंचाई पानी बढकर॰ 2302 क्यूसेक हो गया। हालांकि रविवार को सुबह 2348 क्यूसेक सिंचाई पानी प्रवाहित किया रहा था जो शाम को घटकर 1956 क्यूसेक हो गया। गंगनहर का माह जून 2024 के लिए 2500 क्यूसेक शेयर निर्धारित किया हुआ था।

अधीक्षण अभियंता धीरज चावला ने बताया कि पंजाब में धान की बिजाई होने के कारण फिरोजपुर फीडर से निकलने वाली पंजाब की नहरों में पानी पूरा कर कमी को बीकानेर कैनाल में डाल देते हैं। इससे पानी की मात्रा घट जाती है। मुख्य अभियंता हनुमानगढ़ ने प्रमुख शासन सचिव जल संसाधन पंजाब चंडीगढ़ से गंगकैनाल क्षेत्र में सूख रही फसलों के बचाव के लिए पानी बढ़ाने का अनुरोध किया था। इसके सकारात्मक परिणाम आए और पानी की मात्रा 2169 क्यूसेक प्रवाह रहा। पंजाब भाग में स्थित बीकानेर कैनाल पर इस अवधि के दौरान काफी संख्या में अवैध पाइपें लगाकर पंजाब के किसानों की ओर से अपने खेतों में पानी का उपयोग करने के कारण गंगनहर प्रणाली में रेग्यूलेशन प्रभावित होता है। इसके लिए गश्ती दलों का गठन किया गया है। राजस्थान क्षेत्र में बीकानेर कैनाल में पूर्व में ही गश्ती दल बनाए हुए हैं।

धरना स्थल पर मौजूद किसानों ने बताया कि बारिश नहीं होने व नहरों की लगातार डबल, ट्रिपल बारियां सूखी जाने के कारण खरीफ फसलों की बुवाई पर गहरा संकट मंडरा रहा है। किसानों ने चेतावनी देते हुए कहा कि अगर पानी पूरा नहीं हुआ तो 5 जुलाई को किसान जिला मुख्यालय को ट्रैक्टर-ट्रॉलियों से घेरकर जाम कर देंगे। वहीं, गंगनहर में पानी कम होने की सूचना मिलने पर जीकेएस प्रदेश महासचिव संतवीर सिंह मोहनपुरा ने पंजाब पहुंचकर वहां के सिंचाई विभाग के अधिकारियों से वार्ता कर पानी बढ़ाने की मांग की। परियोजना अध्यक्ष हरविन्द्र सिंह गिल ने रेग्यूलेशन के कनिष्ठ अभियंता विनोद भैरवा के एचनहर का निरीक्षण किया।

जानकारी के अनुसार ग्रामीण किसान मजदूर समिति गंगनहर में पूरे पानी की मांग को लेकर जल संसाधन विभाग कार्यालय के सामने सांकेतिक रूप से अनिश्चितकालीन धरना दिया जा रहा है।

धरनास्थल पर उपस्थित ग्रामीण किसान मजदूर समिति के प्रदेशाध्यक्ष रणजीत सिंह राजू ने बताया कि गंगनहर में पानी का उतार-चढ़ाव जारी है। इससे वरीयता में चल रही बीबी नहर को बंद करना पड़ा। राजू ने बताया कि गंगनहर की सभी नहरों पर दो तीन बारियां खाली जा रही है जिससे ग्वार, मूंग की बिजाई प्रभावित हो रही है। आज धरना स्थल पर परियोजना अध्यक्ष गंगनहर हरविन्द्र सिंह गिल, जीकेएस प्रदेश सह संयोजक विक्रमजीत सिंह शेरगिल कई किसान उपस्थित रहे।

सरकार की "हर घर नल से जल योजना" में खैरथल-तिजारा जिला राजस्थान में तीसरे स्थान पर

वहीं भिवाड़ी को सड़कों पर बहने वाले काले व प्रदूषित पानी से मिली निजात

खैरथल, (निसं)। जिला कलेक्टर डॉ. अर्तिका शुक्ला के निरंतर प्रयासों के चलते खैरथल तिजारा जिले में सरकार की जल जीवन मिशन योजना के तहत हर घर नल से जल उपलब्ध कराने में खैरथल- तिजारा जिला राजस्थान में तीसरे स्थान पर आ गया है।

खैरथल-तिजारा जिले में सरकार की मंशा अनुसार जिला कलेक्टर डॉ.आर्तिका शुक्ला ने कुछ ही महीनों में जल जीवन मिशन के कार्यों की नियमित समीक्षा एवं मार्गदर्शन के चलते कार्य की प्रगति में पंख लग गए और जो जिला राजस्थान में जल 33 वें स्थान से 9 वें पायदान पर और 9 वें पायदान से तीसरे पायदान पर पहुंच गया है। अब जिला कलेक्टर और विभाग के प्रयास रहेंगे कि जिला पहले स्थान पर आये। कार्य की प्रगति को देखते हुए जिला कलेक्टर ने विभाग के अधिकारियों द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा कर बधाई दी है।

अधीक्षण अभियंता स्वास्थ्य एवं जलदाय विभाग धर्मेंद्र यादव ने बताया कि विभाग द्वारा दिए गए मासिक लक्ष्य को 77.44 प्रतिशत पूरा करते हुए खैरथल-तिजारा राजस्थान में तृतीय स्थान पर रहा। जिले में 130425 कनेक्शन में से अब तक 81095 कनेक्शन किए जा चुके है। इसी प्रकार दिसंबर तक जिले में शत प्रतिशत कनेक्शन किए जा चुके गांव की संख्या 45 थी जो की बढ़ कर 195 हो गई है। वर्तमान में जल जीवन मिशन के कार्य 90 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक पूर्ण हो चुके गांव की संख्या 23,80 प्रतिशत से 90 प्रतिशत तक पूर्ण हो चुके गांव की संख्या 29, 70 प्रतिशत से 80 प्रतिशत तक पूर्ण हो चुके गांव की संख्या 45, 50 प्रतिशत से 70 प्रतिशत तक कार्य पूर्ण हो चुके गांव की संख्या 36 एवं 50 प्रतिशत से कम कार्य पूर्ण हो चुके गांव की संख्या 75 है। यही नहीं काले और प्रदूषित सड़क पर बहने वाले पानी की समस्या से भिवाड़ी को निजात दिलाने में जिला कलेक्टर डॉ. अर्तिका शुक्ला का निरंतर प्रयास बारिश में सड़कों पर काला व फैक्ट्री से निकलने वाला प्रदूषित पानी दिखाई नहीं दिया।

भिवाड़ी में सड़कों से काला और प्रदूषित पानी हुआ गायब।

जिला कलेक्टर शुक्ला ने बताया कि पूरे प्रशासन ने एक दूसरे से समन्वय रखते हुए भिवाड़ी जल भराव से निपटने के लिए बनाए गए प्लान पर कार्य करने एवं औद्योगिक इकाइयों के प्रतिनिधियों व आमजन के सहयोग से भिवाड़ी के काले पानी की समस्या से निपटने में सहयोग मिला है।

भिवाड़ी के ड्रेनेज सिस्टम की युद्ध स्तर पर सफाई कर ड्रेजिंग की गई जिससे कि नालों में औद्योगिक इकाइयों से निकले हुए प्रदूषित पानी के हुए जमाव को हटाया गया एवं औद्योगिक इकाइयों पर बीडा, राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल, रीको व राजस्व

■ **कार्य की प्रगति को देखते हुए जिला कलेक्टर ने विभाग के अधिकारियों द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा कर बधाई दी है**

विभाग के अधिकारियों द्वारा लगातार किए गए सर्वे एवं निगरानी का परिणाम है मानसून की बारिश में प्रदूषित पानी देखने को नहीं मिला है।

जिला कलेक्टर ने बताया कि सभी विभागों के अधिकारी औद्योगिक इकाइयों से निकले हुए प्रदूषित पानी को ड्रेनेज में मिलने से रोकने के साथ-साथ बारिश के पानी को सड़कों पर ना बहने देने व हरियाणा द्वारा लगाए रैंप के चलते अलवर भिवाड़ी बाईपास पर इकट्ठा वर्षा जल को निकालने को लेकर किए गए प्लान पर कार्य कर भरे हुए पानी को जल्द से जल्द पंपसेट के माध्यम से निकाल रास्ते को सुचारु रखने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। भिवाड़ी की जल भराव की समस्या के स्थाई निवारण के लिए विभागों द्वारा प्लान तैयार कर राज्य स्तर पर भेजा गया है।